[illegible]

किण्वम क्विंव हत्वमक्तिविमिभृडे। पडिभ्द्र
ह्रुभभृभुभवलभृडे। लिमिभृणीडेश्री
भृमृमरकभम्रडे। के मृक्विभयपृत्तेउम
भृमठखिडभा। हल्यमिवहल्यमेडभृव
बिवभृघा भृडभा। मखुयमृकभमुंभुव
भमुयं उडेरगाउः॥ ॥ ॥ इति रविभृभु
चेहुपडि मिंजभुभुरभमहृभृश्रीपगुर





घृतविधि ॥ चौपई । विशालाग्रेररसि
लाजितनाई ॥ पन्नकनागकेसरकूपाइ
लाछामूपन्नकोसही ॥ निंबढयसर
सामधुलहीयलघुमाएऐश्रोबदसारे
एसभपिसिजोघृतम थिडारे । प
हाजोहीउश्रस्वको ८ । ई सबीत
रंगमकोकदिलेए ॥ बल मेंदुष्टिबा
तकोरोगु ॥ रहेनवदे मूबको
जोगु ॥ तेजकरे सभाव्या
थिकोनास धीहरहेनदेहय
कोनास ॥



एहजिसघोडेकीश्रोषतवाईद्वेउरिवेतिस ।
कीकोई । रोगनहीहोएवहुतमोटाहोएव ।
लहोए ॥

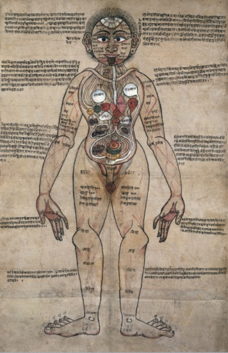
चौपई । द्विजको उंचासचारिहि जाति । न
पको क्षत्रिय एकें भंति ॥



कोऊ कम नि फुनि एसेक है ॥ बार हुतु
रंग महीं भूपति बैठे ॥ शालिहोत्र लिख
न प्रकार जकरे ॥ या । कारन भू
तल अवतरे ॥



॥ बाज ग्रवपर भूपति बैठे समहित ॥



8

ਤ੍ਰੈ
੩

ਕ੍ਰਯਾਵਿਲੋਮਵਿਧਿਸੰਸਤ੍ਰਯਪਰਤ੍ਰਛਿਸਵਾਸਾਤ੍ਰਜਤਯਾਅਦਿਸ੍ਰਿ
ਸਯਾਸਤਸਮੁੰਸਪ੍ਰਤੇ॥੦੧॥ਤਡ੍ਡਾਰਸ੍ਰਤਸਾਚਰੌਸਪਸਵੀਸਙ੍ਰੇ
ਸਯਿਛ੍ਰੇਤਙੰਯਸ੍ਰੰਡੁਵਿਦਿਤੈਦਸਕਵਿਸਤੈਃਸ੍ਰੁਡੰਗਿੰਸ੍ਰਸ੍ਰਤ
ਸਾ॥ਸੈਤ੍ਰਸ੍ਰੀਲਿਤਕਲਿਕੇਕਿਲਜਫ੍ਰਕਾਰਤਗਾਛਿਤਸ੍ਯ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गना॥ श्रीगणेशाय नमः॥ कथयिष्यामि ते देवि महाणां चादि योगिनीः॥ तासां दशाक्रमं चैव फलं प्रत्येक संस्थितं॥ अंतर्दशा च स
॥१॥ र्वासां सर्वदा परिपूजनं॥ विशेषेण तु सिद्धानां पूजनं तन्मनोरपि॥ नातः परतरार स्ताकश्री त्रिभुवनेष्वपि॥ एता मुच विरुद्धास्तु
न ब्रह्मा न च शंकरः॥ न चापि विष्णुर्न लोकेशा ग्रहो अपि नरक्षकाः॥ तस्मादासां प्रयत्नेन कर्त्तव्यं परिपूजनं॥ विद्याकीर्त्ति धना
रोग्य राज्य सौभाग्यमिच्छता॥ मंगला पिंगला धन्या भ्रामरी भद्रिका तथा॥ योगिन्य ष्टौ समाख्याता उल्का सिद्धा च संकटा॥ पिंगला
भवेत्सूर्यो मंगलात्तो निशाकरः॥ भ्रामरीतो भवेत्स्माजो भद्रिकातो विधोः सुतः॥ धन्यकातो गुरुरभूत्सिद्धा [illegible]
तो भृगु संभवः॥ उल्कातो सूर्यतनयः संकटात्तस्तमो भवेत्॥ अस्याएव चरशांते यः केतुरित्यभिधीयते॥ स्वर्क्ष दिनाकिन य
नै ३ संयोज्य वसुभिर्हरेत्॥ शेषेण योगिनी ज्ञेया शल्पयातेद्धु संकटा॥ साजन्म योगिनी ज्ञेया तामारभ्य यथाक्रमं॥ गणयेत्स
(रिशिष्टानां यावअर्के भवेत्स्थितिः॥ साजन्मयोगिनी याता पुनस्त्र्यक्रीत्य वर्त्तते॥ वर्षमेकं मंगलायाः पिंगलाया द्विवर्षकं
एकमेक कवृध्याष्टौ या वत्सरष्टमी समाः॥ मंगला मंगलानंद यशोद्रविणदायिनी॥ पिंगला तनुते व्याधिं मनसो दुःखक ॥



ध्रियुगेसेजन्मक्षिपरिमितेवामहस्तेचान्यस्तु ईकयुग्मे अरिपादहकं नृपतिसमं मुखंवामवसित्थं क्रमेनतत्र १
इतिगुरुचक्रं अथशुक्रचक्रं मौलिपंचवयंवक्रं चक्रंकंहृदः वसाव सप्तवाकोस्वयंगुल्ले द्विजा
जोजनमक्षिपदे मुखंहृदितथामौनी गुह्ये चमरणक्षंवं मुखेस्तोजनंनवाको मंतुजानुपदेश्वा इतिशुक्रचक्रं अस्माशनिचक्र
शिवक्रगतंचटकं चवाशिवक्रेणकरि ध्रियुगेपदं चत्वारिवामकरगात्सुदरेपंच मांप्रिवयंनयो दित्तयंगुरेच १ मुखेस्थितेचा



युपंच त्रयंगु
होहृत्तिपदे
गुरदरोगाधन
नेत्र यशोम
क्लिधनंहृदि
२ कंठहिक्क
रतंगुह्ये पादे
दशोनरंहृजे
त्व वामवाहो
लवेद्रोगो द
दिएोगाणको
नवेत २ इ
तिसोमचक्रं
अथबुधचक्रं

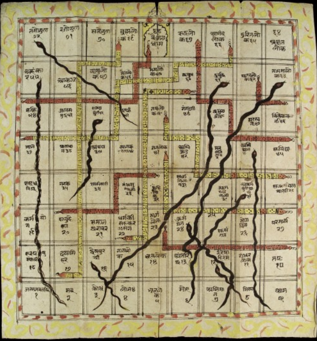
बुधोयत्रस्तथेहके तदादौलिखेक्रमात मुखेज्ञानायपंचसु नेत्रेराज्यायपंचच २ पंचकंठेसुखराय कदिक्शानायपंचच कुयायपा
दयोपंच करयोहीनि दंचयं २ एकंगुह्येचनकुतं अथवसुरिकीर्तितं जन्मऋक्षपर्यंतं बुधचक्रे विचारयेत २ इतिबुधचक्रं अथ ११
बृहस्पतिचक्रं मौलोबृहस्पतिराज्यंयुग्मशिरालाभस्कंधे भूमेचजलमी रेकः कर्मविगतिर्मदनरससमितेवक्रे प्रीतिमासः मत्तिःपीडा

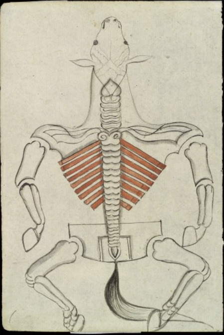





स्वप्नपरीक्षणकी तसबीर


अर्धनारी
नटेश्वर.











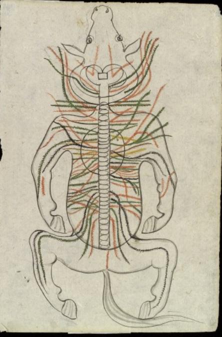












... को एक मठ है ॥

सतयुगी लड़का ।

व्यञ्जनकाकेट में इस सतयुगी बालक का जन्म हुआ था। चारही वर्ष की अवस्था में यह बालक चारफीट तीन इञ्च लम्बा था। छ वर्ष की अवस्था में पांच फीट ऊँचा होगया था और इसी अवस्था में उसके मुखमण्डलपर दाढ़ी और मूछों के रेशमी बाल फरफराते थे। देखने वालों को वह छ वर्ष का बालक पूर्णवयस्क जान पड़ता था ॥

प्रिंस बिस्मार्क और तीन ।

प्रिंस बिस्मार्क तीन से बड़ी प्रीति रखते थे। जीवनकाल में उन्होंने तीन प्रभु की सेवा की थी। तीन लड़ ... [illegible]

बहुत कुछ व्यय करके तैयार किया गया है ॥

स्टे० इ०—अच्छा साहब! आप आइये यहीं ठहरिये आपको तकलीफ नहीं होगी ॥

हम—खेद इस बात का है कि मुझे अपनी तकलीफ का ध्यान नहीं है मुझे जहाँ आप कहें पड़ रहूँगा; किन्तु मेरे कहने का तात्पर्य्य केवल सर्व साधारणके दुःखसे है ॥

हम और भुसावल के टिकट कलेक्टर ।

टि० कले०—देखो जी, तुम इस गाड़ीमें से उतरकर दूसरे डब्बे में जाव, यदि अपनी स्त्रियों को इसी में रहने दो। हैदराबाद निजाम के सवार ... [illegible]

[illegible] क्षण शरीर को देखकर किसे नहीं आश्चर्य होता? जैसा इनके उदर में गुरुत्व है वैसाही अधिकार में भी गुरुत्व है ॥

पंडित अयोध्यानाथ को ९ सितम्बर की रातही को प्रस्थान करना था इसलिये हमने अपने और २ मित्रों को भी इनका चमत्कार दिखलाने की अभिलाषा व्यक्त की। आपने कहा "बहुत अच्छा चलिये"। तब हम पंडितजी को साथ लेकर म्यकडानल हाईस्कूल को गये। वहां बाबू बिपिनबिहारी बैनर्जी हेडमास्टर, बाबू गिरीशचन्द्र विश्वास सेकंडमास्टर, पंडित वासुदेव शास्त्री संस्कृताध्यापक तथा और सब अध्यापक लोग एक कमरे में एकत्र हुए। इन लोगों में से विशेषतया सभी स ... [illegible]

सिहाईका भाव ।

नयामाल	५६ [illegible]
गई सालका	५८ [illegible]
जूना	६३०)-६५० [illegible]
पन्द्रह दिनमें खपी	१००० पेटी
सिहाई बाकास-	५२००) [illegible]
बोटमें चढ़ी	१०३३ [illegible]
बखारमें बाकास	९५० [illegible]

प्रामिसरी नोट(लोन)का भा[illegible]

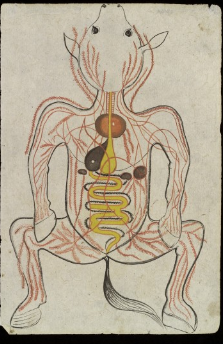
साढ़े तीनटकाकी नोटका नकद	९५ [illegible]
३० नवम्बर के वायदे का	९३॥ [illegible]
५ टका का म्युनिसिपल लोन	१०५॥ [illegible]
पोर्टट्रस्ट बांड	९० [illegible]
म्युनिसिपल बांड ४ टकाका	१०० [illegible]

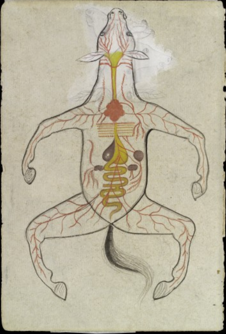
धातु का बाजार ।

[illegible]

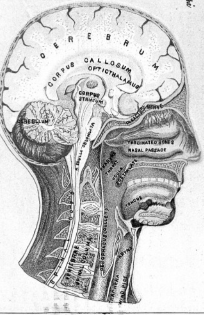
॥ अथ सिद्धनागार्जुनविरचित ॥

॥ कक्षपुट आरम्भ ॥

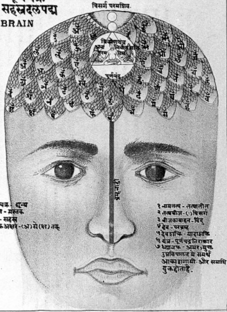


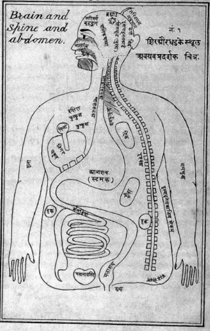


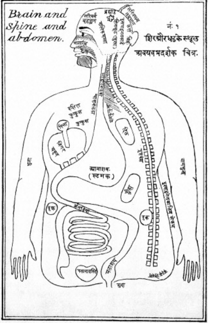
अनाटमीसे मस्तिष्क के भिन्न स्थान स्पष्टरूपसे देखलाये जाते हैं.

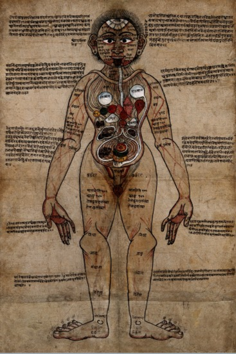


नंबर ७
शून्यचक्र
सहस्रदलपद्म
BRAIN




Brain and Spine and abdomen.
नं. १
शिरश्शरीरधड़के स्थूल अवयवप्रदर्शक चित्र.
आमाशय (स्टमक)


Brain and Spine and abdomen.
नं. १
शिरश्चौरधडके स्थूल अवयवप्रदर्शक चित्र.
आमाशय (स्टमक)



192. Govt. Oriental Mss. Library
Madras.

From
SOCIETY OF BENGAL.
1, Park Street.
Calcutta.

कालिकाचार्यकथापत्र २

नकम् ॥

2 23

1





५ जे

वद्धाजसुपुररायन्नणुकिन्नसदिन्नाजहिंहदिहहि
णिरूणिम्मलाइंविद्दुमरयणइंसुन्नाहलाइंरा॥
सिउपेछइंजहिंअहिंजणअसुहामप्पहिंरयणुम्मि
यकुयससुहासोणञ्चिविसउजसुजणुणवड्डुस
इसंवरंतुदीसइणंदेवुदिवसेविरूवअमिएंरसा॥
हाएंतहंतियरोणसुहवंदत्तहाघरवाविहिंकुसु
यहंकियंविपासोकंजहंहूवउजहिंहासणासोअं
धारपुरिकसिरिखंडलिछ्रासमसिवयणिहिंकिजइ
जङ्कजोण्णु॥घत्ता॥तकुमारिकणयमणिणिम्मविउ
अइविसालुरावलुसहणतियसेसजाणस्समसि
रिणियसोहाइसमुवहइ॥५॥तब्बेवमहीवइमा॥
रिदत्तारूवेणसरेवजिगहियगब्भाणीलुप्पदल॥

४

2